# प्रवासी महिला कथाकारों की कहानियों में प्रवासी जीवन मूल्य
## (अमेरिका के विशेष सन्दर्भ में)

**दयालबाग़ एजूकेशनल इन्स्टीट्यूट (डीम्ड यूनिवर्सिटी) दयालबाग़**

**आगरा की हिन्दी विषय की पी–एच.डी.**

**उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध प्रबन्ध की**

**'रूपरेखा'**

**सन् – 2015**


**निर्देशिका :** | **शोधार्थिनीः**

प्रो. शर्मिला सक्सेना | सुषमा शेखर

हिन्दी विभाग

कला संकाय


**संकाय प्रमुख**


**(हिन्दी विभाग – कला संकाय)**

**दयालबाग़ एजूकेशनल इन्स्टीट्यूट (डीम्ड यूनिवर्सिटी) दयालबाग़**

**आगरा – 282005**

# प्रवासी महिला कथाकारों की कहानियों में प्रवासी जीवन मूल्य

# (अमेरिका के विशेष सन्दर्भ में)

## शोध परिचय

साहित्य समाज का एक दर्पण है। समाज में जो भी घटित हो रहा है साहित्यकार उसी को प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप में अपनी लेखनी के माध्यम से अभिव्यक्त करता है। साहित्य ही एक ऐसा सशक्त माध्यम होता है जिसके द्वारा साहित्यकार अपने उन विचारों को यथार्थ, सशक्त व सजीव रूपों में कागज पर उकेर देता है जिसको उसने स्वयं भोगा है अथवा समाज में लोगों को भोगते देखा है। साहित्यकार अपने समाज में व्याप्त सामाजिक, राजनैतिक, धार्मिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और मनावैज्ञानिक संकटों से जूझकर उन्हें अपने साहित्य में उकेरता है।

प्रवास शब्द 'वास' धातु में 'प्र' उपसर्ग लगाने से बना है। 'वास' का प्रयोग निवास करने के अर्थ में किया जाता है और 'प्र' उपसर्ग लगाने से इसका अर्थ बदल जाता है। इस प्रकार से 'प्रवास' का अर्थ है विदेश गमन, विदेश में बसना तथा अपने देश अथवा घर से बाहर रहना। अतः किसी अन्य देश या निज जन्म स्थान व देश को छोड़कर अन्य इतर देश में जाने वाला 'प्रवासी' कहलाता है। डॉ. सुधा ओम ढ़ींगरा के शब्दों में विदेश में लिखे जा रहे साहित्य को प्रवासी साहित्य कहा जाता है। हर देश के साहित्य की भिन्नता परिवेश, जीवन मूल्य, मानसिकता और सामाजिक सरोकारों से होता है।

भारत देश के ग्रामीण परिवेश से जब कोई व्यक्ति भारत देश के किसी शहर में बसने, रोजगार प्राप्त करने या शिक्षा ग्रहण हेतु जाता था तब उसे विदेश गमन कहा

जाता था किन्तु शिक्षित व सभ्य शहरी समाज में विदेश गये व्यक्ति को ही परदेशी और विदेश गमन को परदेश गमन कहा जाता था। उस समय विदेश का अर्थ परदेश और विदेशी का अर्थ परेदशी से लगाया जाता था। आज भूमण्डलीकरण की परिकल्पना के कारण विदेश का अर्थ बदलकर प्रवास और विदेशी का अर्थ बदलकर प्रवासी हो गया है। अर्थात् वह भारतवंशी जो विदेशों में किसी प्रयोजन हेतु स्वेच्छा से या फिर बलात पूर्वक जाकर बस गये। 'प्रवासी' कहलाऐं इन प्रवासियों में प्रमुख रूप से दो वर्ग के लोग है। एक वर्ग जो अंग्रेजों द्वारा उनके नए उपनिवेशों में मजदूरी करवाने के लिए गुलामों की तरह बलातपूर्वक ले जाए गए जिसमें मॉरीशस, त्रिनिदाद, दक्षिणी अफ्रीका, गयाना, सूरीनाम, फिजी आदि देशों में जाकर बस गये और गिरमिटिया मजदूर के रूप में विख्यात हो गये। यह भारतवंशी ने हिन्दी व हिन्दुस्तानी जीवन मूल्यों को बचाने के लिए समस्त अनुष्ठान, क्रिया–कम व दैनिक गतिविधियाँ हिन्दी भाषा में करने लगे। चूंकि इस वर्ग के लोग अधिकांशत अशिक्षित थे तथा उपनिवेशों के अधीनस्थ मजदूरी करके जीवन यापन करते थे। अतः इनको देश वापस लौटने न दिया गया।

दूसरा वर्ग शिक्षित व सभ्य वर्ग था जो किसी प्रयोजन हेतु विदेशों में जाकर बस गया किन्तु भारत से मेलजोल बने रहे। इस वर्ग में अमेरिका, कनाडा, यू.के., इटली, रूस नार्वे, स्वीडन, नीदरलैण्ड, फ्रांस, डेनमार्क आदि जगहों के भारतवंशी आते हैं। जो इतर देशों में हो रहे भारतवंशियों पर सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, मनोवैज्ञानिक, वैमनस्य, संघर्ष, भेदभाव युक्त यातनाओं को होते देखते या भोगते है। इन्हीं चुनौतीपूर्ण यातनाओं के दम्भ के कारण प्रवासी भारतीयों ने अपने जीवन मूल्यों व अधिकारों को बचाने हेतु अपने अभिव्यक्ति का सबल माध्यम लेखनी को बनाया।

उन्होंने उत्कृष्ट कोटि का एक ऐसा साहित्य संसार पैदा कर दिया जो यथार्थता और प्रवास के जीवन मूल्यों के साथ भी समायोजन स्थापित करके हिन्दी भाषा व भारतीयता को गौरवान्ति रूप में प्रतिष्ठित करने मील का पत्थर साबित हुआ। इतनी यातनापूर्ण चुनौती के साथ भारतीयता एवं भारतीय जीवन मूल्य तथा हिन्दी साहित्य के प्रति प्रवासी साहित्यकारों की इस सजगता व कर्तव्यनिष्ठता को समाज के समक्ष लाना मेरे शोध–कार्य का प्रमुख उद्देश्य है।

व्यक्ति एक सामाजिक प्राणी है। समाज में सकारात्मक जीवन यापन हेतु समाज द्वारा निर्धारित मूल्यों को व्यक्ति अपने आचरण व व्यवहार में उतारता है व उन मूल्यों के साथ समायोजन करता है। कहने का तात्पर्य यह है कि जीवन मूल्य वह मूल्य होते हैं जो व्यक्ति के जीवन को प्रभावित करते हैं, जिनसे बंधकर व्यक्ति अपने जीवन को आगे बढ़ाता है। वस्तुतः समायोजन होने पर व्यक्ति का जीवन सुचारू रूप से चलने लगता है किन्तु जब समायोजन स्थापित नहीं कर पाता तो स्वयं को उस सामाजिक परिवेश में हीन व यामनापूर्ण स्थिति में पाने लगता है। ऐसी विडम्बनापूर्ण स्थितियों का चित्रण एक साहित्यकार जीवन मूल्यों के रूप में करता है। जीवन मूल्य जीवन से जुड़े होने के कारण ही व्यक्ति के सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक, धार्मिक, सांस्कृतिक और मनोवैज्ञानिक मूल्यगत प्रतिबद्धताओं को उजागर करते है।

## प्रस्तुत शोध विषय की प्रेरणा व चयन

साहित्य के किसी भी विषय को शोध अध्ययन का आधार बनाने से पूर्व उसकी सम्पूर्ण अवधारणा व विविध प्रतिमानों से अवगत होना पड़ता है। पी–एच.डी. में नामांकन होने के उपरान्त मैंने "भारत रत्न डॉ. भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय,

दिल्ली, लोथियन रोड, कश्मीरी गेट, दिल्ली" में आयोजित "अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी" दिनांक 20 नवम्बर 2014 को "हिन्दी का प्रवासी साहित्य : एक दृष्टि" में उपस्थित होकर प्रवासी साहित्य को एक जिज्ञासु की दृष्टि से जाना। चूंकि इस संगोष्ठी में कई प्रवासी साहित्यकार के साथ अन्य विश्वविद्यालयों के वह साहित्यकार भी उपस्थित थे जिन्होंने विविध देशों के अपने प्रवास में रचनात्मक लेखन कार्य किया। इस संगोष्ठी में उपस्थित विविध प्रवासी साहित्यकारों के अनुभवों से प्रेरित होकर ही अपने शोध का केन्द्र बिन्दु प्रवासी साहित्य को बनाया। इसके उपरान्त प्रस्तुत विषय "प्रवासी महिला कथाकारों की कहानियों में प्रवासी जीवन मूल्य (अमेरिका के विशेष सन्दर्भ में)" के निर्धारण में मेरी निर्देशिका प्रो. शर्मिला सक्सेना ने मेरी सहायता की। इसके बाद विषय से सम्बन्धित सामग्री संकलन हेतु मैं जे.एन.यू., डी.यू., जामिया मिलिया स्लामिया व केन्द्रीय हिन्दी संस्थान आगरा गयी। इसी के साथ दिल्ली में आयोजित विश्व पुस्तक मेले से मैंने प्रवासी साहित्य पर आधारित विविध पुस्तकों को खरीदा। इसके उपरान्त मैंने विविध प्रवासी साहित्यकारों व सम्पादकों से दूरभाष पर वार्ता की है जिनमें से प्रमुख हैं "हिन्दी चेतना" त्रैमासिक पत्रिका की संपादिका डॉ. सुधा ओम ढ़ींगरा व इसी पत्रिका के अतिथि सम्पादक पंकज सुबीर आदि। आप सभी से वार्ता करने के उपरान्त "प्रवासी महिला कथाकारों की कहानियों में प्रवासी जीवन मूल्य (अमेरिका के विशेष सन्दर्भ में)" विषय पर शोध कार्य करने की मेरी इच्छा बलवती हो गयी।

## प्रस्तुत शोध विषय का उद्देश्य

इस अनुसंधान के माध्यम से अमेरिका के कथा साहित्य में प्रवासी जीवन मूल्यों को उजागर करके यथार्थ की पृष्ठभूमि पर रखने की सफल कोशिश की गयी है।

साथ ही अन्य देशों के कथा साहित्य में निहीत प्रवासी जीवन मूल्यों के साथ तुलना करके बिगड़ते–बनते जीवन मूल्य के प्रतिमानों को उजागर किया जायेगा। जीवकोपार्जन हेतु बलातपूर्वक ले जाये गए या स्वयं किसी प्रयोजन हेतु जाकर बस गये प्रवासी भारतीयों को किस प्रकार सभी प्रकार के जीवन मूल्यों जैसे धार्मिक, आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक व मनोवैज्ञानिक आदि के साथ द्वन्द्वात्मक मनःस्थिति में समायोजन करना पड़ा और किस प्रकार से जीवन मूल्यों के आड़ में तरह–तरह यातनाओं व संघर्षों आदि का सामना करना पड़ा जिसके परिणामस्वरूप जीवन मूल्यों के खाँचे में स्वयं को बैठाते–बैठाते प्रवासी व्यक्ति अन्र्तःद्वन्द्वात्मक पीड़ा, कुण्ठा, निराशा, हताशा, बेगारापन आदि से छटपटाता हुआ दिशाहीन हो जाता है आदि। इस समस्त प्रवासी जीवन के पहलुओं का समग्र रूप से अध्ययन करके समाज के समक्ष सार्थक व यथार्थ जीवन मूल्यों के प्रति दृष्टिकोण विकसित करना मेरे शोध–कार्य का उद्‌देश्य है। इसके अलावा कथा साहित्य के माध्यम से अभिव्यंजित करना है कि किस प्रकार से भूमण्डलीकरण को प्रवासी साहित्य ने एक गति और बल प्रदान करके प्रवासी जीवन का एक सशस्त व स्थायी स्वरूप में विश्व पटल पर अंकित कर दिया है। साथ ही यह बताने का भी उद्‌देश्य निहित है कि प्रवासी यथार्थ परख जीवन मूल्य और भूमण्डलीकरण का प्रभाव (प्रवासी जीवन मूल्य के आन्तरिक और बाह्य जगत का समूचा बिम्ब) सूक्ष्म और मार्मिक ढंग से प्रवासी देशों के कथा साहित्य में अभिव्यक्त किया गया। भूमण्डलीकरण के प्रभाव के कारण किस प्रकार से प्रवासी अपने घर, परिवार, देश व मिट्‌टी से अलग होकर अन्य देशों के काल व परिवेश के साथ जीवन मूल्यों को अपना लेते हैं। हाँलाकि जीवन मूल्य बदलने के कारण शारीरिक, मानसिक व सामाजिक तौर से प्रवासी जीवन प्रभावित होता है।

**शोध विषय का महत्व**

गद्य साहित्य की कहानी विधा अभिव्यक्ति का एक ऐसा सहज व सशक्त माध्यम बन गया है जो सर्व साधारण को भी अपनी ओर आकर्षित करता है। समाज का एक सहृदय पाठक कहानियों को पढ़कर अथवा सुनकर उसमें उठाये गये प्रश्न व उद्देश्य को समझ सकता है। प्रस्तु शोध विषय में अमेरिका के महिला कथाकारों व उनके समकालीन अन्य कथाकारों के कहानी संग्रह में प्रवासी जीवन के विविध मूल्य व्याप्त हैं। यह मूल्य हमें यह सोचने पर विवश कर देते हैं कि प्रवासी जीवन मूल्यों के साथ जीवन यापन करना कितना कठिन व संघर्षपूर्ण होता है। एक भारतवासी जिसे भारतीय मूल्यों के साथ जीने की आदत है, जब विदेश जाता है और वहाँ प्रवासी मूल्यों से दो–चार होता है तो उसे न जाने कितने संघर्षों व कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। इन सभी स्थितियों व द्वन्द्व का यथातथ्य रूप से चित्रण व उन्हें पाठकों के सम्मुख विश्लेषित करना भी इस शोध विषय का एक आवश्यक अंग है। यह शोध विषय प्रवासी जीवन की विविध समस्याओं को उकेरने के साथ–साथ प्रवासी भारतीयों के भारत देश के प्रति लगाव को भी दर्शाता है। प्रवास में रहने वाले लेखक विदेश में हिन्दी भाषा के साहित्य को रच कर एक अनोखा कार्य कर रहे हैं। जिसके द्वारा हिन्दी न केवल देश में बल्कि विदेशों में भी प्रतिष्ठित हो रही है।

**अनुसंधान पद्धति**

मानव एक ऐसा जिज्ञासु और बुद्धिजीवी प्राणी है जो अपनी जिज्ञासा को शान्त करने के लिए निरन्तर खोज, शोध व अनुसंधान आदि करता ही रहता है। मानव की यह जिज्ञासु प्रवृत्ति जन्मजात होती है जिसके कारण अनुसंधान लगातार जीवन के हर क्षेत्र में चलता ही रहता है। साहित्य के क्षेत्र में चलने वाला अनुसंधान एक विशेष

प्रकार का होता है क्योंकि यह साहित्य में विद्यमान समाज के यथार्थ को लेकर चलता है। श्रद्धा, लगन, निष्ठा व अथक परिश्रम से किया जाने के कारण अनुसंधान स्थायी ज्ञान प्राप्ति का एक सशक्त माध्यम भी है। अनुसंधान की अनेकों पद्धतियाँ प्रचलन में है। अतः मैंने अपने शोध कार्य हेतु तुलनात्मक पद्धति का प्रयोग किया है। मेरे शोध–विषय में अमेरिका में प्रवासी प्रतिनिधि महिला कथाकार व अन्य देशों के प्रवासी महिला कथाकारों के कथा साहित्य में प्रवासी जीवन मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन हेतु तुलनात्मक पद्धति का प्रयोग किया जाएगा। इसके बाद विवेचनात्मक, वर्णनात्मक व विवरणात्मक पद्धतियों का भी अवलम्बन लिया जाएगा। अन्त में सम्पूर्ण शोध–विषय का निष्कर्ष दिया जाएगा।

## प्रस्तुत शोध विषय से पूर्व हुआ कार्य

शोध कार्य हेतु प्रवासी साहित्य पर मेरे द्वारा चयनित विषय "प्रवासी महिला कथाकारों की कहानियों में प्रवासी जीवन मूल्य (अमेरिका के विशेष सन्दर्भ में)" पर अभी तक कोई शोध कार्य नहीं हुआ है। प्रवासी साहित्य पर जिस भी विश्वविद्यालय में अनुसंधान कार्य व लघु शोध कार्य हुआ है वह मेरे शोध कार्य के विषय से बिल्कुल भिन्न है। मेरे शोध कार्य से पूर्व प्रवासी साहित्य के जिन विषयों को लेकर शोधकार्य किया गया है उसकी सूची नीचे दी जा रही है जिसके द्वारा यह सत्य निर्धारित हो जाता है कि मेरे शोध कार्य का विषय मौलिक व भिन्नता लिए हुए नया कार्य है।

1. **सठोत्तरी हिन्दी उपन्यासों में प्रवासी जीवन की समस्याएँ**

   शोध छात्र – विरेन्द्र कुमार

   शोध निर्देशिका – मीनाक्षी ठाकुर

   दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली,

31, दिसम्बर–2014

**2. सतहत्तर कथा साहित्य में प्रवासी जीवन मूल्य**

शोध छात्रा – रजनी गुप्ता

शोध निर्देशिका – शोभा सावित्री चन्द्र

जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, दिल्ली

9 जून 2014

**3. सठोत्तरी महिला उपन्यासकारों के लेखन में युग चेतना के विविध आयाम**

शोध छात्र – प्रवीण भारद्वाज

शोध निर्देशक – हरीश नवल

दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

27 मई 2014

**4. प्रवासी हिन्दी कथा साहित्य सांस्कृतिक, स्मृति और समायोजन के द्वन्द्व**

शोध छात्र – केदार कुमार मण्डल

शोध निर्देशक – प्रो. गोविन्द प्रसाद, डॉ. रायचन्द्र

जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, दिल्ली

**5. हिन्दी डायसपोरा लेखन में स्वदेश की खोज (लघु शोध)**

शोध छात्रा – जया शर्मा

दिल्ली विश्वविद्यालय दिल्ली

2007

**6. उषा प्रियम्वदा के कहानियों में प्रवासी चेतना (लघु शोध)**

शोध छात्रा – रजनी गुप्ता

जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, दिल्ली

7. **गिरमिटियाँ और प्रवासी भारतियों की समस्याएँ (लघु शोध)**

   शोध छात्र – रामदर्शन

   जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, दिल्ली

8. **उषा राजे सक्सैना – व्यक्तित्व और कृतित्व**

   कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय, हरियाणा

9. **सुषमवेदी के कथा साहित्य में प्रवासी भारतीय समाज के विविध पक्ष**

10. **सठोत्तरी कथा साहित्य में प्रवासी भारतीय समाज के विविध पक्ष**

11. **डॉ. सुधा ओम ढ़ींगरा की कहानियों में सामाजिक यथार्थ और महिलाओं की स्थिति (लघु शोध हो रहा है।)**

    शोध छात्र – सुबोध शर्मा

    गुजरात केन्द्रीय विश्वविद्यालय, गाँधी नगर

**प्रस्तुत शोध विषय की व्याप्ति**

शोध विषय का अनुसंधान सुचारू रूप से सम्पन्न करने हेतु विषय का नियोजित होना आवश्यक है। शोध कार्य की सुविधा की दृष्टि से मैंने अपने शोध विषय "प्रवासी महिला कथाकारों की कहनियों में प्रवासी जीवन मूल्य" (अमेरिका के विशेष सन्दर्भ में) को सात अध्याय में विभक्त किया है जो इस प्रकार है–

## प्रवासी महिला कथाकारों की कहानियों में प्रवासी जीवन मूल्य

## (अमेरिका के विशेष सन्दर्भ में)

**प्रथम अध्याय**

## (क) प्रवासी जीवन : अवधारणा एवं स्वरूप

- प्रवास का शब्दगत अर्थ
- प्रवास के सन्दर्भ में दी गयी विभिन्न परिभाषाएं
- प्रवास के कारक
- प्रवास के आकर्षक तत्व
- प्रवास के प्रत्याकर्षक तत्व
- प्रवास के रूप
- प्रवास के कारण
- प्रवासी भारतीयों की श्रेणियाँ
- प्रवास के परिणाम
- अमेरिका में प्रवासी भारतीय (ऐतिहासिक दृष्टि में)
- प्रवासी भारतीयों के सन्दर्भ में भारत सरकार की नीति

## (ख) प्रवासी हिन्दी साहित्य : एक अध्ययन

- प्रवासी कथा साहित्य की वैचारिक पृष्ठभूमि
- अमेरिका में प्रवासी हिन्दी साहित्य

## द्वितीय अध्याय

## जीवन मूल्य : सैद्धान्तिक विवेचन

- अर्थ एवं परिभाषा
- भारतीय दृष्टिकोण
- पाश्चात्य दृष्टिकोण
- जीवन मूल्यों का वर्गीकरण
- सामाजिक मूल्य
- मनौवैज्ञानिक मूल्य
- राजनैतिक मूल्य
- आर्थिक मूल्य
- सांस्कृतिक मूल्य
- धार्मिक मूल्य

**तृतीय अध्याय**

**प्रतिनिधि प्रवासी महिला कथाकार और उनका कथा साहित्य : उपलब्धि और सीमा**

**(क) कथाकारों का व्यक्तित्व**

- उषा प्रियम्वदा
- सुषम वेदी
- सुधा ओम ढ़ींगरा
- सुदर्शन प्रियदर्शनी
- पुष्पा सक्सेना
- इला प्रसाद

**(ख) कथाकारों का कृतित्व : एक परिचय**

- उषा प्रियम्वदा
  - एक कोई दूसरा
  - मेरी प्रिय कहानियाँ
  - सम्पूर्ण कहानियाँ
  - कितना बड़ा झूठ
  - जिन्दगी और गुलाब के फूल
  - बनवास

- **सुषम वेदी**

- ➢ चिड़िया और चील
- ➢ यादगारी कहानियाँ
- ➢ तीसरी आँख
- ➢ सड़क की लय (प्रकाशाधीन)

- **सुधा ओम ढ़ींगरा**
  - ➢ वसूली
  - ➢ कौन सी जमीन अपनी
  - ➢ कमरा नं. 103
  - ➢ दस प्रतिनिधि कहानियाँ

- **सुदर्शन प्रियदर्शनी**
  - ➢ उत्तरायण
  - ➢ खाली हथेली (प्रकाशाधीन)

- **पुष्पा सक्सेना**
  - ➢ बाहों में आकाश
  - ➢ पुष्पा सक्सेना द्वारा संकलित कहानियाँ
  - ➢ मीत मेरे तथा अन्य कहानियाँ (प्रकाशाधीन)

- **इला प्रसाद**
  - ➢ उस स्त्री का नाम
  - ➢ इस कहानी का अंत

**चतुर्थ अध्याय**

**अमेरिकी प्रतिनिधि प्रवासी महिला कथाकारों के कथा साहित्य में सामाजिक और मनोवैज्ञानिक जीवन मूल्य**

**(क) सामाजिक जीवन मूल्य**

- नस्लवाद
- कुप्रथाएँ – दहेज, बेमेल विवाह, बाँझपन, वैधव्य आदि
- दैनिक जीवन की समस्याएँ
- अमेरिकी कथा साहित्य में व्यक्त समाज के नैतिक मूल्यों की टकराहट बनाम समाज

**(ख) मनोवैज्ञानिक जीवन मूल्य**

- मनोविज्ञान : सामान्य परिचय
- पात्रों का मनोवैज्ञानिक अध्ययन
- मानसिक हीनता का भाव
- अलगाव (सामाजिक एवं सांस्कृतिक)
- अकेलापन
- मृत्युबोध
- कुण्ठा
- नारी मनोविज्ञान आदि

**पंचम अध्याय**

**प्रतिनिधि प्रवासी महिला कथाकारों के कथा साहित्य में राजनैतिक और आर्थिक जीवन मूल्य (भूमण्डलीकरण के विशेष सन्दर्भ में)**

**(क) राजनैतिक जीवन मूल्य**

- वर्तमान शासन प्रणाली
- सत्ता लोलुपता
- चुनावी राजनीति
- भ्रष्टाचार
- परिवर्तित होते हुए राजनैतिक मूल्य आदि

**(ख) आर्थिक जीवन मूल्य**

- नव धनाढ्य वर्ग की मानसिकता
- उपभोक्तावादी दृष्टिकोण
- अर्थ का जीवन में महत्व
- टूटते रिश्तों का सच अर्थ के सन्दर्भ में
- धनार्जन के लिए गलत तरीकों का प्रयोग

**षष्ठम अध्याय**

## अमेरिकी प्रतिनिधि प्रवासी महिला कथाकारों के कथा साहित्य में सांस्कृतिक और धार्मिक जीवन मूल्य

### (क) सांस्कृतिक जीवन मूल्य

- सांस्कृतिक मूल्यों में गिरावट
- पाश्चात्य संस्कृति की स्तुति
- पारम्परिक उत्सव और रीति–रिवाज
- सांस्कृतिक आघात आदि

### (ख) धार्मिक जीवन मूल्य

- धर्म का स्वरूप, अंधविश्वास
- धार्मिक स्थलों पर होने वाला भ्रष्टाचार
- धर्म और नैतिक मूल्यों की टकराहट आदि

**सप्तम अध्याय**

**अमेरिकी प्रतिनिधि प्रवासी महिला कथाकार और अन्य समकालीन प्रवासी लेखिकाएँ**

- ब्रिटेन की प्रमुख महिला कथाकार
- खाड़ी देश की प्रमुख महिला कथाकार
- मॉरीशस की प्रमुख महिला कथाकार
- फिजी की प्रमुख महिलाकथाकार
- सूरीनाम की प्रमुख महिला कथाकार

**उपसहांर**

**परिशिष्ट**

आधार ग्रन्थ

कोश

विश्वकोश

संदर्भ ग्रन्थ

पत्र–पत्रिकाएँ

साक्षात्कार

प्रश्नावली

# परिशिष्ट

## कोश


- हिन्दी साहित्य कोश : धीरेन्द्र वर्मा, ज्ञान मण्डल लिमिटेड, वाराणसी, 1985
- हिन्दी शब्द कोश : डॉ. हरदेव बाहरी, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली, 1995

## आधार ग्रन्थ


- एक कोई दूसरा – उषा प्रियम्वदा, राजकमल प्रकाशन, 2000
- मेरी प्रिय कहानियाँ : उषा प्रियम्वदा, हिन्दी बुक सेन्टर, 2000
- सम्पूर्ण कहानियाँ : उषा प्रियम्वदा, राजकमल प्रकाशन, 2006
- कितना बड़ा झूठ – उषा प्रियम्वदा, राजकमल प्रकाशन, 2008
- वनवास – उषा प्रियम्वदा, पेंगइन बुक्स, 2009
- चिड़िया और चील : सुषम बेदी, पराग प्रकाशन, 1995
- यादगारी कहानियाँ : सुषम बेदी, हिंद पॉकेट बुक्स, 2014
- तीसरी आँख : सुषम बेदी, पराग प्रकाशन
- वसूली : सुधा ओम ढ़ींगरा, सहोता एंड सन्ज, जालधंर पंजाब, 2001
- कौन सी जमीन अपनी : सुधा ओम ढ़ींगरा, भावना प्रकाशन, दिल्ली, 2010
- कमरा नम्बर 103 : सुधा ओंम ढ़ींगरा, हिन्दी साहित्य निकेतन, बिजनौर, 2013
- दस प्रतिनिधि कहानियाँ : सुधा ओम ढ़ींगरा, शिवनाथ प्रकाशन, सीहोर, 2015
- उत्तरायण : सुदर्शन प्रियदर्शिनी – नमन प्रकाशन, दिल्ली, 2011
- बाहों में आकाश : पुष्पा सक्सेना – प्रथम प्रकाशन गृह, 2009
- पुष्पा सक्सेना द्वारा संकलित कहानियाँ : पुष्पा सक्सेना – नेशनल बुक ट्रस्ट, 2014

# सन्दर्भ ग्रन्थ


- इंग्लैण्ड का इतिहास : शिवकुमार, एस.चाँद एण्ड कम्पनी, नई दिलली 1984
- इंग्लैण्ड का इतिहास : पार्थ सारथि गुप्ता, हिन्दी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, 2004
- इतर : प्रवासी महिला कथाकारों की कहानियाँ, डॉ. सुधा ओम ढ़ींगरा, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत, 2015
- गिरिजा कुमार माथुर के काव्य में जीवन–मूल्य, रीता शर्मा, अनामिका पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, 2009
- निराला साहित्य में जीवन दर्शन, डॉ. विनोदिनी श्रीवास्तव, सुलभ प्रकाशन, लखनऊ 1998
- नई सदी का कथा समय : पंकज सुबीर, शिवना प्रकाशन, सीहोर, 2015
- प्रवासी भारत वासी : एक भारतीय हृदय – प्रताप प्रेस कानपुर, 1918
- प्रवासी भारतीयों की हिन्दी सेवा : कैलाश कुमारी सहाय, अविराम प्रकाशन, दिल्ली, 1994
- प्रवासी हिन्दी लेखक : डॉ. अलका प्रदीप दीक्षित, उत्तर प्रदेश हिन्दी साहित्य सम्मेलन, कानपुर
- प्रवासी आवाज : अंजना संधरी, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
- प्रवासी भारतीयों की पीड़ा : अरविन्द मोहन, राधा कृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, 1998
- प्रवासी और पराराष्ट्रीय समुदाय : इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, नई दिल्ली, 2007

- प्रगतिशील उपन्यासों में, डॉ. जानी देवी, लता साहित्य सदन, 2005
- परम्परा, सर्जन और उपन्यास, विनोद तिवारी, लोकभारती इलाहाबाद, 2002
- फिजी में प्रवासी भारतीय : डॉ. सूची गुप्ता, हिन्दी साहित्य निकेतन, बिजनौर, 2010
- फिजी में प्रवासी भारतीय : जगदीश प्रसाद गुप्त चतुर्वेदी, भारतीय सांस्कृतिक सम्बन्ध परिषद, नई दिलली, 1985
- फिजी में हिन्दी : स्वरूप और विकास – विमलेश कानित वर्मा, धारा वर्मा, पीताम्बरा प्रकाशन, नई दिल्ली, 2010
- बातें मुलाकातें – डॉ. प्रीत अरोड़ा, सुमेधा बुक प्रकाशन, नई दिलली, 2014
- भारत का भूमण्डलीकरण : अभय कुमार दुबे, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, 2003
- भूमण्डलीकरण : कमल नयन भाबरा, प्रकाशन संस्थान, दिल्ली, 2005
- भूमण्डलीकरण उत्तर सांस्कृतिक विमर्श – सुधीश पचौरी, आनन्द प्रकाशन, नई दिल्ली, 2006
- भूमण्डलीकरण : बाजार और हिन्दी – सुधीश पचौरी, प्रवीण प्रकाशन, नई दिल्ली, 2006
- भोजपुरी उपन्यासों में जीवन–मूल्य, डॉ. बलिराम प्रसाद, डी.पी.एस. पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली 2008
- मॉरीशस में भारतीय प्रवासियों का इतिहास : के.हाजरी सिंह मैक्मीलन प्रकाशन, नई दिल्ली, 1974

- मॉरीशस हिन्दी कथा यात्रा : विनोद बाला अरूण, विद्या विहार, नई दिलली, 1997
- मॉरीशस : जितेन्द्र कुमार मित्तल, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली, 1970
- महिला रचनाकारों की कहानियों में जीवन मूल्य – डॉ. भारतीय शेलके, विद्याल प्रकाशन, कानपुर, 2008
- मानव मूल्य और स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी उपन्यास, बलराज सिंह मार, खामा पब्लिशर्स, 2002
- मानव मूल्य और साहित्य, डॉ. धर्मवरी भारती, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली
- रागेय राघव के उपन्यासों में मानव मूल्य, डॉ. सुनीता बानी, विकास प्रकाशन, कानपुर, 2007
- वैश्विक रचनाकार कुछ मूलभूत जिज्ञासाएँ (साक्षात्कार संग्रह) : डॉ. सुधार ओम ढ़ींगरा, शिवना प्रकाशन, सिहोर, 2015
- साठोत्तरी हिन्दी खण्डकाव्यों में जीवन मूल्य, सुश्री ऋतु, शिशि प्रकाशन, मेरठ, 2008
- साठोत्तरी हिन्दी उपन्यासों में परिवर्तित नारी जीवन–मूल्य, डॉ. छाया देवी घोरपडे, विद्या प्रकाशन, कानपुर
- साठोत्तरी कहानी में मानवीय मूल्य, बिनीता अरोरा, नमन प्रकाशन, नई दिल्ली, 1999
- हिन्दी के आंचलिक उपन्यासों में मूल्य–संक्रमण, डॉ. वेद प्रकाश अमिताभा, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, 1997

- हिन्दी कहानी में जीवन मूल्य, डॉ. रमेश चन्द्रलवानियाँ अमित प्रकाशन, गाजियाबाद, 1973
- हिन्दी उपन्यासों में नारी, डॉ. शैल रस्तोगी, वि.भू. प्रकाशन, गाजियाबाद, 1977

## पत्र–पत्रिकाएं

- पूर्वाग्रह
- आलोचना
- कथादेश
- कथाक्रम
- आजकल
- वर्तमान साहित्य
- साहित्य अमृत
- नया ज्ञानोदय
- हंस
- साक्षात्कार
- साहित्य शिल्पी
- साहित्य कुंज
- अभिव्यक्ति
- अनुभूति
- हिन्दी चेतना
- कथान्तर
- देशान्तर

- धर्मयुग
- सारिका, साप्ताहिक हिन्दुस्तान

## प्रवासी विशेषांक

- विशाल भारत, सं. बनारसी दास चतुर्वेदी
- जीवन साहित्य, मासिक, बनारसी दास चतुर्वेदी
- प्रवासी संसार, संपादक राकेश पांडेय
- साक्षात्कार प्रवासी अंक
- गगनांचल, प्रवासी विशेषांक
- सयम लोक, भोपाल, प्रवासी, विशेषांक
- अक्षरम संगोष्ठी, दिल्ली, प्रवासी विशेषांक
- रचना समय, अतिथि संपादक तेजेन्द्र शर्मा
- शोध दिशा अतिथि सं. इलाप्रसाद